# आंटी गुलबदन और सेक्स (प्रेम) के सात सबक-5

"प्रेम गुरु की कलम से 7. गुदा-मैथुन (गांडबाज़ी) मैंने अपने साथ पढ़ने वाले लड़कों से सुना भी था और मस्तराम की कहानियों में भी गांडबाजी के बारे में पढ़ा था। पर मुझे विश्वास ही नहीं होता था कि ऐसा सचमुच में होता होगा। आंटी ने जब सातवें सबक के बारे में बताया कि यह गुदा-मैथुन [...] ..."

**Story By:** prem guru (premguru2u)
**Posted:** Friday, February 19th, 2010
**Categories:** गुरु घण्टाल
**Online version:** आंटी गुलबदन और सेक्स (प्रेम) के सात सबक-5


*Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire*

# आंटी गुलबदन और सेक्स (प्रेम) के सात सबक-5

प्रेम गुरु की कलम से

7. गुदा-मैथुन (गांडबाज़ी)

मैंने अपने साथ पढ़ने वाले लड़कों से सुना भी था और मस्तराम की कहानियों में भी गांडबाजी के बारे में पढ़ा था। पर मुझे विश्वास ही नहीं होता था कि ऐसा सचमुच में होता होगा। आंटी ने जब सातवें सबक के बारे में बताया कि यह गुदा-मैथुन के बारे में होगा तो मुझे बड़ी हैरानी हुई लेकिन बाद में तो मैं इस ख़याल से रोमांचित ही हो उठा कि मुझे वो इसका मज़ा भी देंगी।

आंटी ने बताया कि ज्यादातर औरतें इस क्रिया बड़ी अनैतिक, कष्टकारक और गन्दा समझती हैं। लेकिन अगर सही तरीके से गुदा-मैथुन किया जाए तो यह बहुत ही आनंददायक होता है। एक सर्वे के अनुसार पाश्चात्य देशों में 70 % और हमारे यहाँ 15 % लोगों ने कभी ना कभी गुदा-मैथुन का आनंद जरुर लिया है। पुरुष और महिला के बीच गुदा-मैथुन द्वारा आनंद की प्राप्ति सामान्य घटना है। इंग्लैंड जैसे कई देशों में तो इसे कानूनी मान्यता भी है। पर अभी हमारे देश में इसके प्रति नजरिया उतना खुला नहीं है। लोग अभी भी इसे गन्दा समझते हैं। पर आजकल के युवा कामुक फिल्मों में यह सब देख कर इसके प्रति आकर्षित हो रहे हैं।

योनि के आस पास बहुत सी संवेदनशील नसें होती है और कुछ गुदा के अन्दर भी होती हैं। इस लिए गुदा-मैथुन में पुरुषों के साथ साथ स्त्रियों को भी मज़ा आता है। और यही कारण

है कि दुनिया में इतने लोग समलिंगी होते हैं और खुशी खुशी गांड मरवाते हैं। महिलाओं को भी इसमें बड़ा मज़ा आता है। कुछ शौक के लिए मरवाती हैं और कुछ अनुभव के लिए। आजकल की आधुनिक औरतें कुछ नया करना चाहती हैं इसलिए उन में लंड चूसने और गांड मरवाने की ललक कुछ ज्यादा होती है। अगर वो बहुत आधुनिक और चुलबुली है तो निश्चित ही उसे इसमें बड़ा मज़ा आएगा। वैसे समय के साथ योनि में ढीलापन आ जाता है और लंड के घर्षण से ज्यादा मज़ा नहीं आता। पर गांड महारानी को तो कितना भी बजा लिया जाए वह काफी समय तक कसी हुई रहती है और उसकी लज्जत बरकरार रहती है क्योंकि उसमें लचीलापन नहीं होता। इसलिए गुदा-मैथुन में अधिक आनंद की अनुभूति होती है।

एक और कारण है। एक ही तरह का सेक्स करते हुए पति पत्नी दोनों ही उकता जाते हैं और कोई नई क्रिया करना चाहते हैं। गुदा-मैथुन से ज्यादा रोमांचित करने वाली कोई दूसरी क्रिया हो ही नहीं सकती। पर इसे नियमित तौर पर ना करके किसी विशेष अवसर के लिए रखना चाहिए जैसे कि होली, दिवाली, नववर्ष, जन्मदिन, विवाह की सालगिरह या वो दिन जब आप दोनों सबसे पहले मिले थे। अपने पति को वश में रखने का सबसे अच्छा साधन यही है। कई बार पत्नियां अपने पति को गुदा-मैथुन के लिए मना कर देती हैं तो वो उसे दूसरी जगह तलाशने लग जाता है। अपने पति को भटकने से बचाने के लिए और उसका पूर्ण प्रेम पाने के लिए कभी कभी गांड मरवा लेने में कोई बुराई नहीं होती।

प्रेम आश्रम वाले गुरुजी कहते हैं कि औरत को भगवान् ने तीन छेद दिए हैं और तीनों का ही आनंद लेना चाहिए। इस धरती पर केवल मानव ही ऐसा प्राणी है जो गुदा-मैथुन कर सकता है। जीवन में अधिक नहीं तो एक दो बार तो इसका अनुभव करना ही चाहिए।
सुखी दाम्पत्य का आधार ही सेक्स होता है पर अपने प्रेम को स्थिर रखने के लिए गुदा-मैथुन भी कभी कभार कर लेना चाहिए। इस से पुरुष को लगता है कि उसने अपनी प्रियतमा को पूर्ण रूप से पा लिया है और स्त्री को लगता है कि उसने अपने प्रियतम को

सम्पूर्ण समर्पण कर दिया है।

खैर मैं 4 दिनों के सूखे के बाद आज रात को ठीक 9.00 बजे आंटी के घर पहुँच गया। मुझे उस दिन वाली बात याद थी इसलिए आज मैंने सुबह एक मार मुट्ठ मार ली थी। मैंने पैंट और शर्ट डाल रखी थी पर अन्दर चड्डी जानकर ही नहीं पहनी थी। आंटी ने पतला पजामा और टॉप पहन रखा था। उसके नितम्बों पर कसा पजामा उसकी चूत और नितम्बों का भूगोल साफ़ नज़र आ रहा था लगता था उसने भी ब्रा और पैंटी नहीं पहनी है।

मैंने दौड़ कर उसे बाहों में भर लिया और उसे चूमने लगा तो आंटी बोली,"ओह ... चंदू फिर जल्दबाजी ?"

"मेरी चांदनी मैंने ये 4 दिन कैसे बिताये हैं मैं ही जानता हूँ !" मैंने उसके नितम्बों पर अपने हाथ सहलाते हुए जोर से दबा दिए।

"ओह्हो ?" उसने मेरी नाक पकड़ते हुए कहा।

एक दूसरे की बाहों में जकड़े हम दोनों बेडरूम में आ गए। पलंग पर आज सफ़ेद चादर बिछी थी। साइड टेबल पर वैसलीन, बोरोप्लस क्रीम, नारियल और सरसों के तेल की 2-3 शीशियाँ, एक कोहेनूर निरोध (कंडोम) का पैकेट, धुले हुए 3-4 रुमाल और बादाम-केशर मिला गर्म दूध का थर्मोस रखा था। मुझे इस बात की बड़ी हैरानी थी कि एक रबर की लंड जैसी चीज भी टेबल पर पड़ी है। पता नहीं आंटी ने इसे क्यों रखा था। इससे पहले कि मैं कुछ पूछता, आंटी बोली,"हाँ तो आज का सबक शुरू करते हैं। आज का सबक है गधापचीसी। इसे बैक-डोर एंट्री भी कहते हैं और जन्नत का दूसरा दरवाज़ा भी। तुम्हें हैरानी हो रही होगी ना ?"

मैं जानता तो था पर मैंने ना तो हाँ कहा और ना ही ना कहा। बस उसे देखता ही रह गया।

मैं तो बस किसी तरह यह चाह रहा था कि आंटी को उल्टा कर के बस अपने लंड को उनकी कसी हुई गुलाबी गांड में डाल दूं।

“देखो चंदू सामान्यतया लडकियां पहली बार गांड मरवाने से बहुत डरती और बिदकती हैं। पता नहीं क्यों ? पर यह तो बड़ा ही फायदेमंद होता है। इसमें ना तो कोई गर्भ धारण का खतरा होता है और ना हीं शादी से पहले अपने कौमार्य को खोने का डर। शादीशुदा औरतों के लिए परिवार नियोजन का अति उत्तम तरीका है। कुंवारी लड़कियों के लिए यह गर्भ से बचने का एक विश्वसनीय और आनंद दायक तरीका है। माहवारी के दौरान अपने प्रेमी को संतुष्ट करने का इस से बेहतर तरीका तो कुछ हो ही नहीं सकता। सोचो अपने प्रेमी को कितना अच्छा लगता है जब वो पहली बार अपनी प्रेमिका की अनचुदी और कोरी गांड में अपना लंड डालता है।”

मेरा प्यारे लाल तो यह सुनते ही 120 डिग्री पर खड़ा हो गया था और पैंट में उधम मचाने लगा था। मैं पलंग की टेक लगा कर बैठा था और आंटी मेरी गोद में लेटी सी थी। मैं एक हाथ से उसके उरोजों को सहला रहा था और दूसरे हाथ से उसकी चूत के ऊपर हाथ फिरा रहा था ताकी वो जल्दी से गर्म हो जाए और मैं जन्नत के उस दूसरे दरवाज़े का मज़ा लूट सकूं।

आंटी ने कहना जारी रखा,”कहने में बहुत आसान लगता है पर वास्तव में गांड मारना और मरवाना इतना आसान नहीं होता। कई बार ब्लू फिल्मों में दिखाया जाता है कि 8-9 इंच लम्बा और 2-3 इंच मोटा लंड एक ही झटके में लड़की की गांड में प्रवेश कर जाता है और दोनों को ही बहुत मज़ा लेते दिखाई या जाता है। पर वास्तव में इनके पीछे कैमरे की तकनीक और फिल्मांकन होता है। असल जिन्दगी में गांड मारना इतना आसान नहीं होता इसके लिए पूरी तैयारी करनी पड़ती है और बहुत सी बातों का ध्यान रखना पड़ता है।”

मुझे बड़ी हैरानी हो रही थी भला गांड मारने में क्या ध्यान रखना है। घोड़ी बनाओ और

पीछे से ठोक दो ? पर मैंने पूछा "किन बातों का ?"

"सबसे जरुरी बात होती है लड़की को इस के लिए राज़ी करना ?"

"ओह ..."

"हाँ सबसे मुश्किल काम यही होता है। इस लिए सबसे पहले उसे इसके लिए मानसिक रूप से तैयार करना जरुरी होता है। भगवान् या कुदरत ने गांड को सम्भोग के लिए नहीं बनाया है। इसकी बनावट चूत से अलग होती है। इसमें आदमी का लंड उसकी मर्ज़ी के बिना प्रवेश नहीं कर सकता। इसके अन्दर बनी मांसपेशियाँ और छल्ला वो अपनी मर्ज़ी से ढीला और कस सकती हैं। ज्यादातर लडकियां और औरतें इसे गन्दा और कष्टकारक समझती हैं। इसलिए उन्हें विश्वास दिलाना जरुरी होता है कि प्रेम में कुछ भी गन्दा और बुरा नहीं होता। उसका मूड बनाने के लिए कोई ब्लू फिल्म भी देखी जा सकती है। उसे गुदा-मैथुन को लेकर अपनी कल्पनाओं के बारे में भी बताओ। उसे बताओ कि उसके सारे अंग बहुत खूबसूरत हैं और नितम्ब तो बस क़यामत ही हैं। उसकी मटकती गांड के तो तुम दीवाना ही हो। अगर एक बार वो उसका मज़ा ले लेने देगी तो तुम जिंदगी भर उसके गुलाम बन जाओगे। उसे भी गांड मरवाने में बड़ा मज़ा आएगा और यह दर्द रहित, रोमांचकारी, उत्तेजक और कल्पना से परिपूर्ण तीव्रता की अनुभूति देगा। और अगर जरा भी कष्ट हुआ और अच्छा नहीं लगा तो तुम उससे आगे कुछ नहीं करोगे।

एक बात ख़ासतौर पर याद रखनी चाहिए कि इसके लिए कभी भी जोर जबरदस्ती नहीं करनी चाइये। कम से कम अपनी नव विवाहिता पत्नी से तो कभी नहीं। कम से कम एक साल बाद ही इसके लिए कहना चाहिए।"

"हूँ ...."

“उसके मानसिक रूप से तैयार होने के बाद भी कोई जल्दबाज़ी नहीं। उसे शारीरिक रूप से भी तो तैयार करना होता है ना। अच्छा तो यह रहता है कि उसे इतना प्यार करो कि वो खुद ही तुम्हारा लंड पकड़ कर अपनी गांड में डालने को आतुर हो जाए। गुदा-मैथुन से पूर्व एक बार योनि सम्भोग कर लिया जाए अच्छा रहता है। इस से वो पूर्ण रूप से उत्तेजित हो जाती है। ज्यादातर महिलायें तब उत्तेजना महसूस करती हैं जब पुरुष का लिंग उनकी योनि में घर्षण कर रहा होता है। इस दौरान अगर उसकी गांड के छेद को प्यार से सहलाया जाए तो उसकी गांड की नसें भी ढीली होने लगेंगी और छल्ला भी खुलने बंद होने लगेगा। साथ साथ उसके दूसरे काम अंगों को भी सहलाओ, चूमो और चाटो !”

“और जब लड़की इसके लिए तैयार हो जाए तो सबसे पहले अपने सारे अंगों की ठीक से सफाई कर लेनी चाहिए। पुरुष को अपना लंड साबुन और डिटोल से धो लेना चाहए और थोड़ी सी सुगन्धित क्रीम लगा लेनी चाहिए। मुंह और दांतों की सफाई भी जरुरी है। नाखून और जनन अंगों के बाल कटे हों। लड़कियों को भी अपनी योनि, गुदा नितम्ब, उरोजों और अपने मुंह को साफ़ कर लेना चाहिए। गुदा की सफाई विशेष रूप से करनी चाहिए क्यों कि इसके अन्दर बहुत से बेक्टीरिया होते हैं जो कई बीमारियाँ फैला सकते हैं। दैनिक क्रिया से निपट कर एक अंगुली में सरसों का तेल लगा कर अन्दर डाल कर साफ़ कर लेनी चाहिए। गुदा-मैथुन रात को ही करना चाहिए। और जिस रात गुदा-मैथुन करना हो दिन में 3-4 बार गुदा के अन्दर कोई एंटीसेफ्टिक क्रीम लगा लेनी चाहिए। कोई सुगन्धित तेल या क्रीम अपने गुप्तांगों और शरीर पर लगा लेनी चाहिए। पास में सुगन्धित तेल, क्रीम, छोटे तौलिये और कृत्रिम लिंग (रबर का) रख लेना चाहिए।”

“ओह …” मेरे मुंह से तो बस इतना ही निकला।

“चलो अब शुरू करें ?”

“ओह… हाँ…”

मैंने नीचे होकर उसके होंठ चूम लिए। उसने भी मुझे बाहों में कस कर पकड़ लिया। और बिस्तर पर लुढ़क गए। आंटी चित्त लेट गई। मेरा एक पैर उसकी जाँघों के बीच था लगभग आधा शरीर उसके ऊपर था। उसकी बाहों के घेरे ने मुझे जकड़ रखा था। मैंने उसके गालों पर होंठों पर गले और माथे पर चुम्बनों की झड़ी लगा दी। साथ साथ कभी उसके उरोज मसलता कभी अपना हाथ पजामे के ऊपर से ही उसकी मुनिया को सहला और दबा देता। उसकी मुनिया तो पहले से ही गीली हो रही थी।

अब हमने अपने कपड़े उतार दिए और फिर एक दूसरे को बाहों में भर लिया। मैं उसके ऊपर लेटा था। पहले मैंने उसके उरोजों को चूसा और फिर उसके पेट नाभि, पेडू को चूमते चाटते हुए नीचे तक आ गया। एक मीठी और मादक सुगंध मेरे नथुनों में भर गई। मैंने गप्प से उसकी मुनिया को मुंह में भर लिया। आंटी ने अपने पैर चौड़े कर दिया। मोटी मोटी फांकें तो आज फूल कर गुलाबी सी हो रही थी। मदनमणि तो किसमिस के फूले दाने जैसी हो रही थी। मैं अपनी जीभ से उसे चुभलाने लगा। उसकी तो सीत्कार ही निकल गई। कभी उसकी तितली जैसी पतली पतली अंदरुनी फांकें चूसता कभी उस दाने को दांतों से दबाता। साथ साथ उसके उरोजों को भी दबा और सहला देता।

आंटी ने अपने घुटने मोड़ कर ऊपर उठा लिए। मैंने एक तकिया उसके नितम्बों के नीचे लगा दिया। आंटी ने अपनी जांघें थोड़ी सी चौड़ी कर दी। अब तो उसकी चूत और गांड दोनों के छेद मेरी आँखों के सामने थे। गांड का बादामी रंग का छोटा सा छेद तो कभी खुलता कभी बंद होता ऐसे लग रहा था जैसे मुंबई की मरीन ड्राइव पर कोई नियोन साइन रात की रोशनी में चमक रहा हो। मैंने एक चुम्बन उस पर ले लिया और जैसे ही उस पर अपनी जीभ फिराई तो आंटी की तो किलकारी ही निकल गई। उसकी चूत तो पहले से ही गीली हुई थी। फिर मैंने स्टूल पर पड़ी वैसलीन की डब्बी उठाई और अपनी अंगुली पर क्रीम लगाई और अंगुली के पोर पर थोड़ी सी क्रीम लगा कर उसके खुलते बंद होते गांड के छेद पर लगा दी। दो तीन बार हल्का सा दबाव बनाया तो मुझे लगा आंटी ने बाहर की

ओर जोर लगाया है। उसकी गांड का छेद तो ऐसे खुलने लगा जैसे कोई कमसिन कच्ची कलि खिल रही हो। मेरा एक पोर उसकी गांड के छेद में चला गया। आह… कितना कसाव था। इतना कसाव महसूस कर के मैं तो रोमांच से भर उठा। बाद में मुझे लगा कि जब अंगुली में ही इतना कसाव महसूस हो रहा है तो फिर भला मेरा इतना मोटा लंड इस छोटे से छेद में कैसे जा पायेगा ?

मैंने आंटी से पूछा "चांदनी, एक बात पूछूं ?"

"आह … हूँ । ?"

"क्या तुमने पहले भी कभी गांड मरवाई है ?"

"तुम क्यों पूछ रहे हो ?"

"वैसे ही ?"

"मैं जानती हूँ तुम शायद यह सोच रहे होगे कि इतना मोटा लंड इस छोटे से छेद में कैसे जाएगा ?"

"हूँ … ?"

"तुम गांड रानी की महिमा नहीं जानते। हालांकि इस में चूत की तरह कोई चिकनाई नहीं होती पर अगर इसे ढीला छोड़ दिया जाए और अन्दर ठीक से क्रीम लगा कर तर कर लिया जाए तो इसे मोटा लंड अन्दर लेने में भी कोई दिक्कत नहीं होगी। पर तुम जल्दबाज़ी करोगे तो सब गुड़ गोबर हो जाएगा !"

"क्या मतलब ?"

मेरे पति ने एक दो बार मेरी गांड मारने की कोशिश की थी पर वो अनाड़ी था। ना तो मुझे तैयार किया और ना अपने आप को। जैसे ही उसने अपना लंड मेरे नितम्बों के बीच डाला अति उत्तेजना में उसकी पिचकारी फूट गई और वो कुछ नहीं कर पाया ? पर तुम चिंता मत करो मैं जैसे समझाऊँ वैसे करते जाओ। सब से पहले इसे क्रीम लगा कर पहले रवां करो "

"ओके ..."

अब मैंने बोरोप्लस की ट्यूब का ढक्कन खोल कर उसकी टिप को गांड के छेद पर लगा दिया। ट्यूब का मुंह थोड़ा सा गांड के छेद में चला गया। अब मैंने उसे जोर से पिचका दिया। लगभग ट्यूब की आधी क्रीम उसकी गांड के अन्दर चली गई। आंटी थोड़ा सा कसमसाई। लगता था उसे गुदगुदी और थोड़ी सी ठंडी महसूस हुई होगी। मैंने अपनी अंगुली धीरे धीरे अन्दर खिसका दी। अब तो मेरी अंगुली पूरी की पूरी अन्दर बाहर होने लगी। आह... मेरी अंगुली के साथ उसका छल्ला भी अन्दर बाहर होने लगा। अब मुझे लगने लगा था की छेद कुछ नर्म पड़ गया है और छल्ला भी ढीला हो गया है। मैंने फिर से उसकी चूत को चूसना चालू कर दिया। आंटी के कहे अनुसार मैंने यह ध्यान जरूर रखा था कि गांड वाली अंगुली गलती से उसकी चूत के छेद में ना डालूं।

आंटी की मीठी सीत्कार निकलने लगी थी। आंटी ने अब कहा "उस प्यारे लाल को भी उठाओ ना ?"

"हाँ वो तो कब का तैयार है जी !" मैंने अपने लंड को हाथ में लेकर हिला दिया।

"अरे बुद्धू मैं टेबल पर पड़े प्यारे लाल की बात कर रही हूँ !"

"ओह ..."

अब मुझे इस प्यारे लाल की उपयोगिता समझ आई थी। मैंने उसे जल्दी से उठाया और

उस पर वैसलीन और क्रीम लगा कर धीरे से उसके छेद पर लगाया। धीरे धीरे उसे अन्दर सरकाया। आंटी ने बताया था कि धक्का नहीं लगाना बस थोड़ा सा दबाव बनाना है। थोड़ी देर बाद वो अपने आप अन्दर सरकना शुरू हो जाएगा।

धीरे धीरे उसकी गांड का छेद चौड़ा होने लगा और प्यारे लाल जी अन्दर जाने लगे। गांड का छेद तो खुलता ही चला गया और प्यारे लाल 3 इंच तक अन्दर चला गया। आंटी ने बताया था कि अगर एक बार सुपाड़ा अन्दर चला गया तो बस फिर समझो किला फतह हो गया है। मैं 2-3 मिनट रुक गया। आंटी आँखें बंद किये बिना कोई हरकत किये चुप लेटी रही। अब मैंने धीरे से प्यारे लाल को पहले तो थोड़ा सा बाहर निकला और फिर अन्दर कर दिया। अब तो वह आराम से अन्दर बाहर होने लगा था। मैंने उसे थोड़ा सा और अन्दर डाला। इस बार वो 5-6 इंच अन्दर चला गया। मेरा लंड भी तो लगभग इतना ही बड़ा था। अब तो प्यारे लाल जी महाराज आराम से अन्दर बाहर होने लगे थे।

3-4 मिनट ऐसा करने के बाद मुझे लगा कि अब तो उसका छेद बिलकुल रवां हो गया है। मेरा लंड तो प्री-कम छोड़ छोड़ कर पागल ही हो रहा था। वो तो झटके पर झटके मार रहा था। मैंने एक बार फिर से उसकी मुनिया को चूम लिया। थोड़ी देर उसकी मुनिया और मदनमणि हो चूसा और दबाया। उसकी मुनिया तो कामरस से लबालब भरी थी जैसे। आंटी ने अपने पैर अब नीचे कर के फैला दिए और मुझे ऊपर खींच लिया। मैंने उसके होंठों को चूम लिया।

“ओह ... मेरे चंदू ... आज तो तुमने मुझे मस्त ही कर दिया !” आंटी उठ खड़ी हुई। “क्या अब तुम इस आनंद को भोगने के लिए तैयार हो ?”

“मैं तो कब से इंतज़ार कर रहा हूँ ?”

“ओह्हो ... क्या बात है ? हाईई।.. मैं मर जावां बिस्कुट खा के ?” आंटी कभी कभी

पंजाबी भी बोल लेती थी।

“देखो चंदू साधारण सम्भोग तो किसी भी आसन में किया जा सकता है पर गुदा-मैथुन 3-4 आसनों में ही किया जाता है। मैं तुम्हें समझाती हूँ। वैसे तुम्हें कौन सा आसन पसंद है ?”

“वो… वो… मुझे तो डॉगी वाला या घोड़ी वाला ही पता है या फिर पेट के बल लेटा कर … ?”

“अरे नहीं… चलो मैं समझाती हूँ !” बताना शुरू किया।

पहली बार में कभी भी घोड़ी या डॉगी वाली मुद्रा में गुदा-मैथुन नहीं करना चाहिए। पहली बार सही आसन का चुनाव बहुत मायने रखता है। थोड़ी सी असावधानी या गलती से सारा मज़ा किरकिरा हो सकता है और दोनों को ही मज़े के स्थान पर कष्ट होता है।

देखो सब से उत्तम तो एक आसन तो है जिस में लड़की पेट के बल लेट जाती है और पेट के नीचे दो तकिये लगा कर अपने नितम्ब ऊपर उठा देती है। पुरुष उसकी जाँघों के बीच एक तकिये पर अपने नितम्ब रख कर बैठ जाता है और अपना लिंग उसकी गुदा में डालता है। इस में लड़की अपने दोनों हाथों से अपने नितम्ब चौड़े कर लेती है जिस से उसके पुरुष साथी को सहायता मिल जाती है और वो एक हाथ से उसकी कमर या नितम्ब पकड़ कर दूसरे हाथ से अपना लिंग उसकी गुदा में आराम से डाल सकता है। लड़की पर उसका भार भी नहीं पड़ता।

एक और आसन है जिसमें लड़की पेट के बल अधलेटी सी रहती है। एक घुटना और जांघ मोड़ कर ऊपर कर लेती है। पुरुष उसकी एक जांघ पर बैठ कर अपना लिंग उसकी गुदा में डाल सकता है। इस आसन का एक लाभ यह है कि इसमें दोनों ही जल्दी नहीं थकते और धक्के लगाने में भी आसानी होती है। जब लिंग गुदा में अच्छी तरह समायोजित हो जाए

तो अपनी मर्ज़ी से लिंग को अन्दर बाहर किया जा सकता है। गांड के अन्दर प्रवेश करते लंड को देखना और उस छल्ले का लाल और गुलाबी रंग देख कर तो आदमी मस्त ही हो जाता है। वह उसके स्तन भी दबा सकता है और नितम्बों पर हाथ भी फिरा सकता है। सबसे बड़ी बात है उसकी चूत में भी साथ साथ अंगुली की जा सकती है। इसका सबसे बड़ा फायदा तो यह है कि धक्का मारते या दबाव बनाते समय लड़की आगे नहीं सरक सकती इसलिए लंड डालने में आसानी होती है।

एक और आसन है जिसे आमतौर पर सभी लड़कियां पसंद करती है। वह है पुरुष साथी नीचे पीठ के बल लेट जाता है और लड़की अपने दोनों पैर उसके कूल्हों के दोनों ओर करके उकड़ू बैठ जाती है। उसका लिंग पकड़ कर अपनी गुदा के छल्ले पर लगा कर धीरे धीरे नीचे होती है। लड़की अपना मुंह पैरों की ओर भी कर सकती है। इस आसन का सबसे बड़ा फायदा यह है कि सारी कमांड लड़की के हाथ में होती है। वो जब चाहे जितना चाहे अन्दर ले सकती है। कुछ महिलाओं को यह आसन बहुत पसंद आता है। यह आसन पुरुषों को भी अच्छा लगता है क्योंकि इस दौरान वे अपने लिंग को गुदा के अन्दर जाते देख सकते हैं। पर कुछ महिलायें शर्म के मारे इसे नहीं करना चाहती।

इसके अलावा और भी आसन हैं जैसे गोद में बैठ कर या सोफे या पलंग पर पैर नीचे लटका कर लड़की को अपनी गोद में बैठा कर गुदा-मैथुन किया जा सकता है। पसंद और सहूलियत के हिसाब से किसी भी आसन का प्रयोग किया जा सकता है।

“ओह… तो हम कौन सा आसन करेंगे ?”

“मैं तुम्हें सभी आसनों की ट्रेनिंग दूँगी पर फिलहाल तो करवट वाला ही ठीक रहेगा ”

“ठीक है।” मैंने कहा।

मुझे अब ध्यान आया मेरा प्यारे लाल तो सुस्त पड़ रहा है। ओह ... बड़ी मुश्किल थी। आंटी के भाषण के चक्कर में तो सारी गड़बड़ ही हो गई। आंटी धीमे धीमे मुस्कुरा रही थी। उसने कहा," मैं जानती हूँ सभी के साथ ऐसा ही होता है। पर तुम चिंता क्यों करते हो ? मेरे पास इसका ईलाज है।"

अब वो थोड़ी सी उठी और मेरे अलसाए से लंड को हाथ में पकड़ लिया वो बोलीं,"इसे ठीक से साफ़ किया है ना ?"

"जी हाँ"

अब उसने मेरा लंड गप्प से अपने मुंह में भर लिया और चूसने लगी। मुंह की गर्मी और लज्जत से वो फिर से अकड़ने लगा। कोई 2-3 मिनट में ही वो तो फिर से लोहे की रोड ही बन गया था।

उसने पास रखे तौलिए से उसे पोंछा और फिर पास रखे निरोध की ओर इशारा किया। मुझे हैरानी हो रही थी। आंटी ने बताया कि गुदा-मैथुन करते समय हमेशा निरोध (कंडोम) का प्रयोग करना चाहिए। इससे संक्रमण नहीं होता और एड्स जैसी बीमारियों से भी बचा जा सकता है।

अब मैंने अपने लंड पर निरोध चढ़ा लिया और उस पर नारियल का तेल लगा लिया। आंटी करवट के बल हो गई और अपना बायाँ घुटना मोड़ कर नीचे एक तकिया रख लिया। अब उसके मोटे मोटे गुदाज नितम्बों के बीच उसकी गांड और चूत दोनों मेरी आँखें के सामने थी। मैंने अपना सिर नीचे झुका कर एक गहरा चुम्बन पहले तो चूत पर लिया और फिर उसकी गांड के छेद पर। अब मैंने फिर से बोरोप्लस के क्रीम की टयूब में बाकी बची क्रीम उसकी गांड में डाल दी। आंटी ने अपने बाएं हाथ से अपने एक नितम्ब को पकड़ कर ऊपर की ओर कर लिया। अब तो गांड का छेद पूरा का पूरा दिखने लगा। उसके छल्ले का रंग

सुर्ख लाल सा हो गया था। अब एक बार प्यारे लाल की मदद की जरुरत थी। मैंने उस पर भी नारियल का तेल लगाया और फिर से उसकी गांड में डाल कर 5-6 बार अन्दर बाहर किया। इस बार तो आंटी को जरा भी दर्द नहीं हुआ। वो तो बस अपने उरोजों को मसल रही थी। मैं उसकी दाईं जाँघ पर बैठ गया और अपने लंड के आगे थोड़ी सी क्रीम लगा कर उसे आंटी की गांड के छेद पर टिका दिया।

मेरा दिल उत्तेजना और रोमांच के मारे धड़क रहा था। लंड महाराज तो झटके ही खाने लगे थे। उसे तो जैसे सब्र ही नहीं हो रहा था। मैंने अपने लंड को उसके छेद पर 4-5 बार घिसा और रगड़ा, फिर उसकी कमर पकड़ी और अपने लंड पर दबाव बनाया। आंटी थोड़ा सा आगे होने की कोशिश करने लगी पर मैं उसकी जाँघ पर बैठा था इसलिए वो आगे नहीं सरक सकती थी। मैंने दबाव बनाया तो मेरा लंड थोड़ा सा धनुष की तरह मुड़ने लगा। मुझे लगा यह अन्दर नहीं जा पायेगा जरूर फिसल जाएगा। इतने में मुझे लगा आंटी ने बाहर की ओर जोर लगाया है। फिर तो जैसे कमाल ही हो गया। पूरा सुपाड़ा अन्दर हो गया। मैं रुक गया। आंटी का शरीर थोड़ा सा अकड़ गया। शायद उसे दर्द महसूस हो रहा था। मैंने उसके नितम्ब सहलाने शुरू कर दिए। प्यार से उन्हें थपथपाने लगा। गांड का छल्ला तो इतना बड़ा हो गया था जैसे किसी छोटी बच्ची की कलाई में पहनी हुई कोई लाल रंग की चूड़ी हो। उसकी चूत भी काम रस से गीली थी। मैंने अपने बाएं हाथ की अँगुलियों से उसकी फांकों को सहलाना शुरू कर दिया।

2-3 मिनट ऐसे ही रहने के बाद मैंने थोड़ा सा दबाव और बनाया तो लंड धीरे धीरे आगे सरकाना शुरू हो गया। अब तो किला फ़तेह हो ही चुका था और अब तो बस आनंद ही आनंद था। मैंने अपना लंड थोड़ा सा बाहर निकाला और फिर अन्दर सरका दिया। आंटी तो बस कसमसाती सी रह गई। मेरे लिए तो यह किसी स्वर्ग के आनंद से कम नहीं था। एक नितांत कोरी और कसी हुई गांड में मेरा लंड पूरा का पूरा अन्दर घुसा हुआ था। मैंने एक थपकी उसके नितम्बों पर लगाईं तो आंटी की एक मीठी सीत्कार निकल गई।

“चंदू अब धीरे धीरे अन्दर बाहर करो !” आंटी ने आँखें बंद किये हुए ही कहा। अब तक लंड अच्छी तरह गांड के अन्दर समायोजित हो चुका था। बे रोक टोक अन्दर बाहर होने लगा था। छल्ले का कसाव तो ऐसा था जैसे किसी ने मेरा लंड पतली सी नली में फंसा दिया हो।

“चांदनी तुम्हें दर्द तो नहीं हो रहा ?”

“अरे बावले, तुम्हारे प्रेम के आगे ये दर्द भला क्या मायने रखता है। मेरी ओर से ये तो नज़राना ही तुम्हें। तुम बताओ तुम्हें कैसा लग रहा है ?”

“मैं तो इस समय स्वर्ग में ही हूँ जैसे। तुमने मुझे अनमोल भेंट दी है। बहुत मज़ा आ रहा है।” और मैंने जोर से एक धक्का लगा दिया।

“ऊईई ... माआअ ... थोड़ा धीरे ...”

“चांदनी मैंने कहानियों में पढ़ा है कि कई औरतें गांड मरवाते समय कहती हैं कि और तेजी से करो ... फाड़ दो मेरी गांड... आह... बड़ा मज़ा आ रहा है ?”

“सब बकवास है... आम और पर औरतें कभी भी कठोरता और अभद्रता पसंद नहीं करती। वो तो यही चाहती हैं कि उनका प्रेमी उन्हें कोमलता और सभ्य ढंग से स्पर्श करे और शारीरिक सम्बन्ध बनाए। यह तो उन मूर्ख लेखकों की निरी कल्पना मात्र होती है जिन्होंने ना तो कभी गांड मारी होती है और ना ही मरवाई होती है। असल में ऐसा कुछ नहीं होता। जब सुपाड़ा अन्दर जाता है तो ऐसे लगता है जैसे सैंकड़ों चींटियों ने एक साथ काट लिया हो। उसके बाद तो बस छल्ले का कसाव और थोड़ा सा मीठा दर्द ही अनुभव होता है। अपने प्रेमी की संतुष्टि के आगे कई बार प्रेमिका बस आँखें बंद किये अपने दर्द को कम करने के लिए मीठी सीत्कार करने लगती है। उसे इस बात का गर्व होता है कि वो अपने प्रेमी को

स्वर्ग का आनंद दे रही है और उसे उपकृत कर रही है !”

आंटी की इस साफगोई पर मैं तो फ़िदा ही हो गया। मैं तो उसे चूम ही लेना चाहता था पर इस आसन में चूमा चाटी तो संभव नहीं थी। मैंने उसकी चूत की फांकों और दाने को जोर जोर से मसलना चालू कर दिया। आंटी की चूत और गांड दोनों संकोचन करने लगी थी। मुझे लगा कि उसने मेरा लंड अन्दर से भींच लिया है। आह… इस आनंद को शब्दों में तो बयान किया ही नहीं जा सकता।

लंड अन्दर डाले मुझे कोई 10-12 मिनट तो जरूर हो गए थे। आमतौर पर इतनी देर में स्खलन हो जाता है पर मैंने आज दिन में मुट्ठ मार ली थी इसलिए मैं अभी नहीं झड़ा था। लंड अब आराम से अन्दर बाहर होने लगा था।

आंटी भी आराम से थी। वो बोली,” मैं अपना पैर सीधा कर रही हूँ तुम मेरे ऊपर हो जाना पर ध्यान रखना कि तुम्हारा प्यारे लाल बाहर नहीं निकले। एक बार अगर यह बाहर निकल गया तो दुबारा अन्दर डालने में दिक्कत आएगी और हो सकता है दूसरे प्रयाश में अन्दर डालने से पहले ही झड़ जाओ ?”

“ओके।..”

अब आंटी ने अपना पैर नीचे कर लिया और अपने नितम्ब ऊपर उठा दिए। तकिया उसके पेट के नीचे आ गया था। मैं ठीक उसके ऊपर आ गया और मैंने अपने हाथ नीचे करके उसके उरोज पकड़ लिए। उसने अपनी मुंडी मोड़ कर मेरी ओर घुमा दी तो मैंने उसे कस कर चूम लिया। मैंने अपनी जांघें उसके चौड़े नितम्बों के दोनों ओर कस लीं। जैसे ही आंटी अपने नितम्बों को थोड़ा सा ऊपर उठाया तो मैं एक धक्का लगा दिया।

आंटी की मीठी सीत्कार सुनकर मुझे लग रहा था कि अब उसे मज़ा भले नहीं आ रहा हो

पर दर्द तो बिलकुल नहीं हो रहा होगा। मुझे लगा जैसे मेरा लंड और भी जोर से आंटी की गांड ने कस लिया है। मैं तो चाहता था कि इसी तरह मैं अपना लंड सारी रात उसकी गांड में डाले बस उसके गुदाज बदन पर लेटा ही रहूँ। पर आखिर शरीर की भी कुछ सीमाएं होती हैं। मुझे लग रहा था कि मेरा लंड थोड़ा सा फूलने और पिचकने लगा है और किसी भी समय पिचकारी निकल सकती है। आंटी ने अपने नितम्ब ऊपर उठा दिए। मैंने एक हाथ से उसकी चूत को टटोला और अपने बाएं हाथ की अंगुली चूत में उतार दी। आंटी की तो रोमांच और उत्तेजना में चींख ही निकल गई। और उसके साथ ही मेरी भी पिचकारी निकलने लगी।

“आह।.. य़ाआआ……” हम दोनों के मुंह से एक साथ निकला। दो जिस्म एकाकार हो गए। इस आनंद के आगे दूसरा कोई भी सुख या मज़ा तो कल्पनातीत ही हो सकता है। पता नहीं कितनी देर हम इसी तरह लिपटे पड़े रहे।

मेरा प्यारे लाल पास होकर बाहर निकल आया था। हम दोनों ही उठ खड़े हुए और मैंने आंटी को गोद में उठा लिया और बाथरूम में सफाई कर के वापस आ गए। मैंने आंटी को बाहों में भर कर चूम लिया और उसका धन्यवाद किया। उसके चहरे की रंगत और ख़ुशी तो जैसे बता रही थी कि मुझे अपना सर्वस्व सोंप कर मुझे पूर्ण रूप से संतुष्ट कर कितना गर्वित महसूस कर रही है। मुझे पक्का प्रेम गुरु बनाने का संतोष उसकी आँखों में साफ़ झलक रहा था।

उस रात हमने एक बार फिर प्यार से चुदाई का आनंद लिया और सोते सोते एक बार गधापचीसी का फिर से मज़ा लिया। और यह सिलसिला तो फिर अगले 8-10 दिनों तक चला। रात को पढ़ाई करने के बाद हम दोनों साथ साथ सोते कभी मैं आंटी के ऊपर और कभी आंटी मेरे ऊपर ………

मेरी प्यारी पाठिकाओं !आप जरूर सोच रही होंगी वाह।.. प्रेम चन्द्र माथुर प्रेम गुरु बन

कर तुम्हारे तो फिर मज़े ही मज़े रहे होंगे ?

नहीं मेरी प्यारी पाठिकाओं ! जिस दिन मेरी परीक्षा ख़त्म हुई उसी दिन मुझे आंटी ने बताया कि वो वापस पटियाला जा रही है। उसने जानबूझ कर मुझे पहले नहीं बताया था ताकि मेरी पढ़ाई में किसी तरह का खलल (विघ्न) ना पड़े। मेरे तो जैसे पैरों के नीचे से जमीन ही निकल गई। मैंने तो सोच था कि अब छुट्टियों में आंटी से पूरे 84 आसन सीखूंगा पर मेरे सपनों का महल तो जैसे किसी ने पूरा होने से पहले तोड़ दिया था।

जिस दिन वो जाने वाली थी मैंने उन्हें बहुत रोका। मैं तो अपनी पढ़ाई ख़त्म होने के उपरान्त उससे शादी भी करने को तैयार था। पर आंटी ने मना कर दिया था पता नहीं क्यों। उन्होंने मुझे बाहों में भर कर पता नहीं कितनी देर चूमा था। और कांपती आवाज में कहा था,"प्रेम, मेरे जाने के बाद मेरी याद में रोना नहीं... अच्छे बच्चे रोते नहीं हैं। मैं तो बस बुझती शमा हूँ। तुम्हारे सामने तो पूरा जीवन पड़ा है। तुम अपनी पढ़ाई अच्छी तरह करना। जिस दिन तुम पढ़ लिख कर किसी काबिल बन जाओगे हो सकता है मैं देखने के लिए ना रहूँ पर मेरे मन को तो इस बात का सकून रहेगा ही कि मेरा एक शिष्य अपने जीवन के हर क्षेत्र में कामयाब है !"

मैंने छलकती आँखों से उन्हें विदा कर दिया। मैंने बाद में उन्हें ढूंढ़ने की बहुत कोशिश की पर उनसे फिर कभी मुलाकात नहीं हो सकी। आज उनकी उम्र जरूर 45-46 की हो गई होगी पर मैं तो आज भी अपना सब कुछ छोड़ कर उनकी बाहों में समा जाने को तैयार हूँ। आंटी तुम कहाँ हो अपने इस चंदू के पास आ जाओ ना। मैं दिल तो आज 14 वर्षों के बाद भी तुम्हारे नाम से ही धड़कता है और उन हसीं लम्हों के जादुई स्पर्श और रोमांच को याद करके पहरों आँखें बंद किये मैं गुनगुनाता रहता हूँ :

तुम मुझे भूल भी जाओ तो ये हक है तुमको

मेरी बात ओर है, मैंने तो मोहब्बत की है।

मेरे प्यारे पाठको और पाठिकाओं आंटी के बनाए इस प्रेम गुरु को क्या आप एक मेल भी नहीं करोगे ?

आपका प्रेम गुरु

# Other stories you may be interested in

## चलती ट्रेन में चूत चुदाई का पहला अनुभव

नमस्ते दोस्तो, मैं करीब 4 साल से अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ. यह कहानी मेरा पहला अनुभव है, जो कि इसी दिसंबर महीने में हुआ. सबसे पहले मैं आपको अपना परिचय दे दूं. मैं जोधपुर का रहने वाला हूँ, मेरा […]

Full Story >>>

## गर्लफ्रेंड की चूत के साथ उसकी माँ की चूत फ्री

कैसे हो दोस्तो, मेरा नाम विकास कुमार नागर है. मेरी उम्र 21 साल है और मैं यू.पी. से हूँ। मेरी हाइट 6.3 फीट है और मेरे लण्ड का साइज़ 7 इंच है। मैं एक गाँव का ही रहने वाला हूँ […]

Full Story >>>

## हवसनामा : सुलगती चूत-4

दोस्तो, मैं पारुल … मैंने अपनी कहानी के पिछले हिस्से में बताया था कि किस तरह मैंने जुगाड़ बना कर दो लोगों से एकसाथ बेहद आक्रामक संभोग किया था लेकिन फिर रघु मुलुक(देश, गाँव, मुल्क) चला गया था तो मैं […]

Full Story >>>

## आंटी को पटा कर चोदना सीखा

दोस्तो, सभी पाठकों को मेरा सादर प्रणाम। मैं अक्की अपनी पहली कहानी आप सबके बीच लेकर आया हूँ और उम्मीद करता हूँ आपको बहुत पसंद आयेगी। मेरा नाम अक्की है और मैं मेरठ (उत्तर प्रदेश) के एक गाँव का रहने […]

Full Story >>>

## हॉट लंड हॉट चूत का डबल धमाल

नमस्कार दोस्तो, मैं काफी दिनों के बाद कोई हॉट स्टोरी लिख रहा हूँ. उम्मीद करता हूँ पिछली वाली गर्म सेक्स कहानी की तरह ये भी आपको पसंद आएगी. जैसा कि मैंने पहले बताया था कि मैं ग्वालियर में रहता हूं […]

Full Story >>>